अंक : १३१

जुलाई - सितंबर २०१५

कथाबिंब

कथाप्रधान त्रैमासिक पत्रिका

कहानियां

डॉ. गायत्री कमलेश्वर • नीरजा हेमेंद्र • बृज मोहन

सोहन वैष्णव • डॉ. अशोक गुजराती

आमने-सामने • डॉ. अशोक गुजराती

सागर-सीपी • दिनेश प्रभात

१५ रुपये

जुलाई-सितंबर २०१५
(१९७९ से प्रकाशित)

कथाबिंब

प्रधान संपादक
डॉ. माधव सक्सेना "अरविंद"
संपादिका
मंजुश्री
संपादन सहयोग
जय प्रकाश त्रिपाठी
अश्विनी कुमार मिश्र
अशोक वशिष्ठ
हम्माद अहमद ख़ान

संपादन-संचालन पूर्णतः
अवैतनिक तथा अव्यवसायिक

●सदस्यता शुल्क●
आजीवन : ५०० रु., **त्रैवार्षिक** : १२५ रु.,
वार्षिक : ५० रु.,
(वार्षिक शुल्क ५ रु. के डाक टिकटों के रूप में भी स्वीकार्य है)
कृपया सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा केवल **"कथाबिंब"** के नाम ही भेजें.

●रचनाएं व शुल्क भेजने का पता●
ए-१० बसेरा, ऑफ दिन-क्वारी रोड,
देवनार, मुंबई-४०० ०८८.
फोन : २५५१ ५५४१, ९८१९१६२६४८
e-mail : kathabimb@yahoo.com
www.kathabimb.com

● **न्यूयॉर्क संपर्क** ●
नरेश मित्तल
(M) 845-304-2414
नमित सक्सेना
(M) 347-514-4222
● **शिकागो संपर्क** ●
तूलिका सक्सेना
(M) 224-875-0738

एक प्रति का मूल्य : १५ रु.
कृपया नमूने की प्रति मंगाने हेतु
१५ रु. के डाक टिकट अवश्य भेजें.
(सामान्य अंक : ४०-४४ पृष्ठ)

कहानियां

अतीत की शाख पर - **डॉ. गायत्री कमलेश्वर** ७
पहाड़ों की नर्म धूप - **नीरजा हेमेंद्र** १३
कोटर वाले कक्का - **बृज मोहन** १९
देवा की वसीयत - **सोहन वैष्णव** २५
भगदड़ - **डॉ. अशोक गुजराती** २९

लघुकथाएं

सुयोग्य लड़की / **कृष्ण चंद्र महादेविया** १७
कर्मयोगी / **माधव नागदा** २४
क़िताबें / **डॉ. कुंवर प्रेमिल** २४

कविताएं / गीत / ग़ज़लें

कविता / **जसप्रीत कौर "फलक"** ११
गीत / **डॉ. मधु प्रसाद** २८
गीत / **प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र** ३५
ग़ज़ल / **सच्चिदानंद "इंसान"** ३६

स्तंभ

"कुछ कही, कुछ अनकही" २
लेटर बॉक्स ४
"आमने-सामने" / **डॉ. अशोक गुजराती** ३७
"सागर-सीपी" / **दिनेश प्रभात** ४१
"बाइस्कोप" **(सविता बजाज)** / **श्याम बेनेगल** ४७
पुस्तक-समीक्षा ५०

●**"कथाबिंब" अब फेसबुक पर भी** ●
facebook.com/kathabimb
आवरण पर नामित रचनाकारों से निवेदन है कि वे कृपया अपने नाम को "टैग" करें.

आवरण चित्र : हमिंग पक्षी
चित्रकार : श्रीमती रुथ यैंग (सैन डियेगो, अमेरिका).
www.ruthyangphotography.com

"कथाबिंब" मुंबई की "संस्कृति संरक्षण संस्था" के सौजन्य से प्रकाशित होती है.

कुछ कही, कुछ अनकही

यह वर्ष का तीसरा अंक है. पिछला अंक अगस्त मध्य में ही रिलीज़ हो पाया था. प्रसन्नता है कि इस बार मात्र दो माह के अंतराल में *"कथाबिंब"* का १३१ वां अंक पाठकों तक पहुंचना संभव हो पाया. इतने वर्षों के बाद भी हर अंक एक चुनौती लेकर आता है. हां, इधर कुछ वर्षों से इतना अवश्य हुआ है कि रचनाकारों का भरपूर सहयोग हमें मिलने लगा है. सामान्य डाक के अलावा ई-मेल से भी अनेक कहानियां व अन्य छुटपुट रचनाएं प्रकाशन के लिए आती हैं. हमने कई बार निवेदन किया है कि कृपया रचनाएं पीडीएफ फाइल में अथवा यूनिकोड में भेजें. हमारी कोशिश रहती है कि सामान्यतया कहानी के निर्णय की सूचना एक माह में भेज दी जाये, अन्य रचनाओं के निर्णय में कुछ अधिक समय लग सकता है. कुछ रचनाकार एक साथ ई-मेल द्वारा *"कथाबिंब"* के साथ ही, अन्य अनेक पत्रिकाओं को भी रचना प्रेषित करते हैं. इन रचनाओं पर विचार करना संभव नहीं होता. हमारा यह भी आग्रह रहता है कि रचना के साथ इस बात का भी उल्लेख रहे कि रचना मौलिक है व निर्णय मिलने तक अन्यत्र नहीं भेजी जायेगी. कृपया लघुकथाएं, ग़ज़ल, कविताएं जैसी छुटपुट रचनाएं भेजते समय, एक बार में कम से कम निर्णय की सुविधा के लिए ३ से ४ रचनाएं भेजें. पिछले अंक में बहन श्रीमती गायत्री कमलेश्वर के निधन की ख़बर पढ़ कर देश-विदेश के अनेक लेखकों व पाठकों के संवेदना संदेश मिले. हम सभी के हृदय से आभारी हैं. यह संयोग ही है कि एक पुरानी फ़ाइल देखते हुए गायत्री जी की एक अप्रकाशित कहानी मिली. उन्होंने शायद काफ़ी पहले, *"कथाबिंब"* में छपने के लिए अपनी दो कहानियां दी थीं, एक कहानी प्रकाशित हुई और दूसरी रखी रह गयी. अंक में उनकी स्मृति में यह कहानी प्रस्तुत है.

पिछले अंक में *"सागर-सीपी"* स्तंभ में भाई यज्ञ शर्मा का साक्षात्कार प्रकाशित हुआ था. किसी भी पत्रिका को दिया गया यह उनका अंतिम साक्षात्कार था. १४ अगस्त को हृदयाघात से शर्मा जी का अचानक स्वर्गवास हो गया. *"कथाबिंब"* परिवार की ओर से उनको भावभीनी श्रृद्धांजलि!

●

अब इस अंक की कहानियों का ट्रेलर -- नियति क्या रच रही है कोई कुछ नहीं कह सकता. इस अंक की पहली कहानी *"अतीत की शाख पर"* गायत्री जी की अंतिम प्रकाशित कहानी है. एक महिला को पति ने छोड़ दिया है पर वह हार नहीं मानती, वह अपने पैरों पर खड़ी है. पति साथ नहीं है इसका उसे दुख नहीं है किंतु उसकी प्यारी बच्ची को उससे दूर रखा जाता है यह बात तकलीफदेय है. समय फिर करवट बदलता है. अगली कहानी की लेखिका नीरजा हेमेंद्र *("पहाड़ों की नर्म धूप")* का नाम *"कथाबिंब"* के पाठकों के लिए कतिपय नया है. पहाड़ों पर रहने वालों का जीवन चाहे कितनी ही कठिनाइयों से भरा क्यों न हो किंतु उन्हें भी अपनी माटी से, नर्म धूप से उतना ही लगाव होता है जितना कहीं भी किसी और को. कहानी की नायिका शिवांगो न पहाड़ छोड़ना चाहती है न ही अपने पिता से दूर रहना चाहती, ऐसे में आख़िर बीच का रास्ता निकल ही आता है. बरसों बाद हमें भाई बृजमोहन का लेखकीय योगदान प्राप्त हुआ. *"कोटर वाले कक्का"* रेलवे लाइन के पास रहने वाले एक ऐसे मुफ़लिस परिवार की कहानी है जिसे यह नहीं पता कि कल का भोजन कहां से आयेगा. बड़ा लड़का मोनू होशियार और होनहार है. रेलवे में काम करने वाले कक्का जब भी घर पर आते हैं तो बच्चों को ख़ुशियां बांटते हैं. मोनू को उन्होंने गोद लिया है यह बात तब मालूम पड़ी जब एक रेल दुर्घटना में कक्का की मौत होगयी. अपनी मौत से भी कक्का ढेर सारी ख़ुशियां पूरे परिवार को दे गये. नक्सलवाद से देश का एक बड़ा भू-भाग काफ़ी समय से प्रभावित है. शीघ्र कोई समाधान निकलेगा इसका कोई संकेत नहीं है. सोहन वैष्णव की कहानी *"देवा की वसीयत"* इसी पृष्ठिभूमि पर आधारित है. रोहन की दंतेवाड़ा में नयी-नयी नौकरी लगती है. ट्रेन यात्रा के दौरान नक्सली देवा से उसका साबका होता है. सारी सच्चाई का पता बाद में पता लगता है. देवा को सही रास्ते पर लाने की रोहन असफल कोशिश करता है. किंतु यह तो एक अंतहीन लड़ाई है. *"भगदड़"* (डॉ. अशोक गुजराती) अंक की अंतिम कहानी है. भगदड़ के कारण मंदिरों में या इसी तरह के भीड़ वाले स्थानों में, दुर्घटनाओं में न जाने कितने लोगों की जानें गयी हैं. लेखक ने इन घटनाओं के पीछे एक सोची-समझी नियोजित साजिश की ओर इशारा किया है. वैसे यह कहना कि क्या सच है और क्या ग़लत यह कतई मुश्किल है.

●

आज सारा विश्व एक कठिन समय से गुज़र रहा है. सीरिया में इस्लाम के प्रभुत्व की लड़ाई महज उस क्षेत्र की लड़ाई नहीं है. इंटरनेट या अन्य माध्यमों से, हर कहीं से कम उम्र के युवा मुसलमानों को "इस्लामिक स्टेट" के लिए रिक्रूट किया जा रहा है. वहां पहुंच कर जब वास्तविकता का पता चलता है तब तक बहुत देर हो गयी होती है और फिर "लौटना" बहुत मुश्किल होता है. सीरिया और आसपास के अमनप्रिय लोग भाग-भाग कर यूरोप के देशों में शरण के लिए घुसने की कोशिश करते हैं. उनका क्या हश्र होता है कुछ पता नहीं. भारत में नेपाल, बंग्लादेश, श्रीलंका और पाकिस्तान से लगातार

घुसपैठ होती रहती है. कश्मीर में वर्षों से मिलेट्री तैनात है. शायद ही कोई ऐसा दिन होगा जब सीमा पार से गोलाबारी न हो. नक्सल हमलों में भी हमारे नवजवानों की जानें जाती हैं. किसानों की आत्महत्याओं में भी कोई कमी नहीं हुई है.

२०१४ में लोकसभा चुनाव के परिणाम स्वरूप पूर्ण बहुमत वाली सरकार ५ साल के जनादेश के साथ केंद्र में आयी है. विरासत में बहुत सारी समस्याएं मिली हैं. ब्यूरोकेसी वही पुराने ढर्रे पर चल रही है. पिछले लगभग डेढ़ साल में किसी न किसी प्रांत में विधान सभा के चुनावों में प्रधानमंत्री से लेकर सरकार के सभी मंत्रियों को समय लगाना पड़ रहा है. राज्यसभा में बहुमत नहीं होने के कारण नये अध्यादेशों को लाना मुश्किल है. कॉन्ग्रेस अपनी हार को पचा नहीं पा रही है वह पूरी तरह दिगभ्रमित है. उसका एक ही उद्देश्य है संसद को नहीं चलने देना, जिससे कालांतर में नयी सरकार पर दोषारोपण किया जा सके कि देखा अपने वायदे पूरे नहीं कर पाये. यह एक तरह से "केकड़ा-प्रवृत्ति" है. केकड़ों में यह पाया जाता है कि यदि एक केकड़ा दीवाल पर चढ़ रहा हो तो शेष लटक कर उसे पीछे खींचने लगते हैं.

आजकल बिहार के चुनावों की सरगर्मी है. शीना हत्या का मामला ठंडा पड़ गया है और राधा मां पर तो कोई केस ही नहीं बनता! पूरे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर बस चुनाव फोबिया छाया हुआ है. किसने किसको क्या गाली दी, किसने क्या विवादित बयान दिया? सब ब्रेकिंग न्यूज़ और एक्सक्लूसिव के नाम पर सतत चलाया जा रहा है. बहुत पहले से मैंने टीवी सीरियलों को देखना बंद कर दिया था. कुछ सीरियल ख़तम होने का नाम ही नहीं लेते. वही गहने और महंगी साड़ियां पहने महिलाएं, बात-बात पर महल या घर के हाल में सब घर वालों का जमा हो जाना, एक के कुछ कहने के बाद बारी-बारी से सबके चेहरे दिखाना. अब धीरे-धीरे न्यूज़ चैनलों से भी मोहभंग होता जा रहा है. चाहे दूसरी चैनल हों या न्यूज़ चैनल सबका मुख्य उद्देश्य पैसा कमाना है. "कहीं नहीं जाइएगा, बस अभी लौटते हैं." तुरंत विज्ञापन शुरू हो जाते हैं, फिर ४-५ मिनटों के बाद ही समय की गणना शुरू होती है. आधे घंटों के समाचारों में पहले "हेडलाइन्स" ...विज्ञापन... फिर कई प्रायोजक ... "बड़ी ख़बर" प्रायोजक... पहली ख़बर, प्रायोजक... दूसरी ख़बर, प्रायोजक... तीसरी ख़बर इत्यादि. फिर विज्ञापन. इस तरह १५ मिनट विज्ञापन और शेष "समाचार!" शाम के ६ बजे से रोज़ उन्हीं "अतिथियों" के साथ जुगाली शुरू ..."हल्ला बोल" या "बड़ी बहस." आजकल हर चैनल बढ़-चढ़ कर "स्वच्छ भारत अभियान" में तत्परता दिखाने की कोशिश कर रही है, साथ ही नये-नये गुटकों, यथा – महक, जयश्री, दिलबाग, शिखर, चैनी खैनी, रजनीगंधा, पान विलास, आर. एम. डी., शुद्ध प्लस और भी कुछ के विज्ञापन जिनमें बड़े-बड़े फ़िल्मी कलाकार होते हैं, धड़ल्ले से दिखाये जाते हैं. गुटका-बीड़ी लॉबी के सामने क्या मीडिया, क्या सरकार सबके मुंह "बंद" हैं. देश में कैंसर के मरीजों की संख्या बढ़ती ही जाती है. विज्ञापन दिये जाते हैं कि तंबाखू खाने और सिगरेट-बीड़ी पीने के कारण कैंसर होता है. गुटका जिसमें अधिकांशतः तंबाखू होती है भी कैंसर का कारण है. कूड़े के ढेरों पर हर ब्रांड के गुटके के खाली पैकट कोई भी देख सकता है. सड़क पर चलते हुए लोग, चलती कार का दरवाज़ा खोलकर गुटके की पीक थूकते हुए "महानुभाव" आपको कहीं भी दिख जायेंगे. क्यों नहीं कैबिनेट में अध्यादेश लाकर गुटका और प्लास्टिक पर तुरंत पाबंदी लगती? सबके दोहरे मापदंड हैं. राजस्थान में सिगरेट, गुटका जनता के हित में सस्ता किया गया! यह कैसा जनहित? सिगरेट-बीड़ी के पैकटों पर चेतावनी स्वरूप चित्रों के लिए समिति बनती है यह तय करने के लिए कि आकार ८०, ६० या फिर ४० प्रतिशत हो! इस पर भी विचार हुआ कि सिगरेट के पैकट पर तो चेतावनी होती है किंतु हर सिगरेट पर चेतावनी नहीं छापी जा सकती तो छुट्टा सिगरेट बेचने पर पाबंदी लगा देना चाहिए.

●

नयी सरकार आने के बाद से कहा जा रहा है कि महंगाई की दर कम हुई है. लेकिन ज़मीनी सच्चाई इससे कतई भिन्न है. टमाटर, आलू, प्याज़ की क़ीमतों के लिए मौसम की दुहाई देना उचित नहीं है. दालें सामान्य जन की पहुंच से बाहर हैं. स्पष्ट है कि जमाखोर, बिचौलिए और मुनाफ़ाखोर अंधाधुंध पैसा कमा रहे हैं. सिर्फ़ त्यौहारों के दिनों में नकली दूध और नकली खोया बनाने वालों पर छापे पड़ते हैं. जमाखोरी को तुरंत जघन्य अपराध की श्रेणी में लाना चाहिए. कितना अनाज बंदरगाहों में और खुले में पड़े-पड़े सड़ जाता है. इसमें युद्ध-स्तर पर कार्यवाही की आवश्कता है. बड़े-बड़े स्मारकों के निर्माण में धन का अपव्यय करने की अपेक्षा देश के करोड़ों भूखे लोगों के पेट भरने से अच्छा कोई "स्मारक" नहीं हो सकता. देश में एक केंद्रीय "मानक निर्धारण संस्थान" कार्यरत है. इसको चीज़ों के मूल्य निर्धारण का भी अधिकार देना चाहिए. अधिकतम खुदरा क़ीमत के स्थान पर संस्थान "निम्नतम मूल्य" तय करे साथ ही गुणवत्ता का भी नियंत्रण करे. यानी लाभांश की सीमा सरकार तय करे. इन या ऐसे ही क़दमों से महंगाई कम करना मुश्किल नहीं होगा. आपके पास कुछ अन्य सुझाव हैं तो सरकार को भेजें. आज भारतीय जनता के पास सबसे बड़ा अधिकार है : "सूचना का अधिकार." यदि आपको कुछ ग़लत लग रहा है तो झिझके नहीं. अगर आपको शिकायत है तो मात्र दस रुपये में किसी भी विभाग की जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती है.

अरविंद

लेटर-बॉक्स

▶▶ जिस पत्रिका में कहानियां पढ़कर पूरा सुकून मिले वह पत्रिका है 'कथाबिंब'. मैं 'कथाबिंब' एक अरसे से पढ़ रहा हूं. और इसका रसास्वादन भी पूरी तबियत से करता रहा हूं. सच पूछा जाये तो मैंने कहानियां लिखना भी 'कथाबिंब' से सीखा जो आगे चलकर दो-दो कहानी संग्रहों के संपादन का सबब भी बना. इस बार अप्रैल-जून का अंक मिला तब कुछ फुरसत का आलम था. बड़ी बेसब्री से पढ़ा. मेरे ख़्याल से पठन-पाठन ऐसी ही बेसब्री का तलबगार है... वह पूरी तन्मयता ... लयबद्धता चाहता है. 'सुरभि बेहेरा' की कहानी पढ़ने से पहले निग़ाहें उनके पते पर गयीं. चूंकि मैं भी ओड़ीसा होकर आया हूं एक सर्वेक्षण के सिलसिले में. सीधे-सादे, मेहनतकश लोगों के बीच रहकर ज़रूर आप इंप्रेस होंगे ऐसा मेरा मानना है. कहानी में हैदराबाद के ट्रेनिंग सेंटर का ज़िक्र है जो मेरा ट्रेनिंग सेंटर भी रहा है. कहानी परस्पर सहृदयता के आधार पर बुनी गयी है. ... आज जिसका अभाव चारों तरफ़ परिलक्षित होता जा रहा है. ख़ेद है.

'गुलाबी लिफ़ाफ़ा' में रूबी मोहंती ने उस महिला को लेकर कथानक बुना है जिसमें भारतीय नारी की सुगंध है. वह अपने परिवार... घर गृहस्थी... बच्चों में इतनी रम जाती है कि उसका 'स्व' भी कहीं खो जाता है. 'पति भक्ति' से सराबोर कहानी फिर हमें सत्यवान की सावित्री की याद दिलाती है. भारतीय नारी एक बार जिसकी हुई फिर दूसरे आदमी का प्रवेश कहां तक संभव है? पति उसके मोटापे, उसकी गहन पारिवारिक लिप्तता से दुखी होकर 'गुलाबी लिफ़ाफ़ा' भेजता है जिसका ट्रीटमेंट कारगर भी होता है. तीसरी कहानी डॉ. दीप्ति पटनायक को पढ़कर मैं भी संपादक जी की तरह इसे ओड़िया अंक मानने को तैयार हूं.

सूदखोरी पर लिखी लघुकथा 'एक अकेला' समाज का वह सच है जिसकी गुंजलक में फंसकर कितने कर्ज़दार मर खप जाते हैं. ब्याज लेते जाते हैं... मूल धन पाते जाते हैं... फिर भी उनका कर्ज़ ज्यों का त्यों बना रहता है. कर्ज़ कभी उतरने का नाम ही नहीं लेता. छोटा हो या बड़ा शहर, इसने बरपाया है बड़ा कहर. विवशता में सुसाइड कर कितने जीवन, मृत्यु के मुंह में समा गये हैं.... अकल्पनीय है.

'सागर/सीपी' में लिव इन रिलेशनशिप पर काफ़ी चर्चा है जो एक सम-सामयिक समस्या है. कोई इसे समयानुकूल भी कहता है. कोई अपने कैरियर के लिए ज़रूरी बताता है. मैं उन सबसे एक ही बात पूछता हूं कि ऐसा सभी करने लग जायें तो घर-गृहस्थी का क्या बनेगा? एक ग़लत परंपरा एक दिन इस समाज को ख़तरा बनकर निगल जायेगी... यह याद रखना पड़ेगा.

'आमने-सामने' स्तंभ पॉपुलर हो रहा है. उसमें विगत में भाग लेने वालों की बड़ी सूची इसकी पॉपुलरटी की द्योतक है. अन्य सामग्री भी विधिवत है. अरविंद जी की पैनी नज़र से गुज़रकर ही 'कथाबिंब' में रचनाएं जगह बनाती हैं. एक बड़ी यात्रा की सहयात्री है 'कथाबिंब'. मुझे ख़ुशी इस बात की रही है कि 'यथेष्ट' जगह मिली है मुझे भी इसमें.

- डॉ. कुंवर प्रेमिल

एम. आई. जी.-८, विजयनगर, जबलपुर-४८२००२ (म. प्र.)

▶▶ 'कथाबिंब' का अप्रैल-जून '१५ अंक प्राप्त हुआ. सुरभि बेहेरा की कहानी 'अंतिम इच्छा' सकारात्मक अंत की रचना है. जीवन में दु:खद घटनाएं घटती हैं, किंतु उन्हें सुखांत मोड़ देना हमारे हाथ में है. रेणु के पति ललित की कैंसर से अकाल मृत्यु हो जाती है. उदय, रेणु को उसके पुत्र लियो सहित अपना लेता है. रूबी मोहंती की कहानी 'गुलाबी लिफ़ाफ़ा' एक रहस्यमय सुखांत रचना है. रीना के व्यक्तित्व रूपांतरण का उसका पति सुनील एक नायाब़ तरीक़ा ढूंढ़ता है. वह अपनी पत्नी के नाम एक गुमनाम प्रेमपत्र का सिलसिला चलाता है जिसके प्रभाव से रीना में शारीरिक-मानसिक परिवर्तन आते हैं. अंत में पति ही पूर्व प्रेमी निकलता है. चरित्र प्रधान कहानी 'धीरा मौसी' सबको